शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

संजीव की कहानियों में आदिवासी समाज की समस्याएं और चुनौतियाँ

ज्योति कुमारी मीणा (शोधार्थी)
शोध छात्रा ;हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन हिन्दी कहानी में आदिवासी समाज को लेकर बहुत ही कम लिखा गया है। आजादी के पहले हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं मे आदिवासी जीवन पर कुछ कहानियाँ लिखी गयी थीं। लेकिन हिन्दी में आदिवासी कहानी की शुरूआत आजादी के बाद ही हुई है। योगेन्द्र नाथ सिन्हा, उदय प्रकाश, संजीव, रामदयाल मुण्डा, रणेन्द्र, पीटरपाल एक्का जैसे कुछ गिने-चुने साहित्यकार हैं, जिन्होंने आदिवासी जीवन पर अपनी लेखनी चलायी। संजीव ने आदिवासी जीवन का सूक्ष्म अवलोकन किया। उनकी कहानियाँ उनके आदिवासी जीवन का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती हैं। इस शोध पत्र में आदिवासी समाज की समस्याओं की पड़ताल संजीव की कहानियों के बरक्स की गयी है।

संजीव की कहानियां और आदिवासी समाज

आठवें दशक के बाद नक्सलवादी आंदोलन तथा नवें दशक के बाद उदारीकरण की नीतियों के कारण आदिवासी समाज में हुई हलचल से कथाकारों ने अपनी कहानियों में आदिवासी समाज के विकास और उससे उपजे विस्थापन, शोषण के विभिन्न रूपों, सरकार की नीतियों का चित्रण किया है। आदिवासी समुदायों के साथ के आत्मीय रिश्ते और आदिवासी आन्दोलन के कारण साथ ही भारतीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की नक्सलवाड़ी धारा ;भारत की कम्युनिस्ट पार्टी लिबरेशन और उसके जनसंगठन इण्डियन पीपुल्स फ्रंट जो आम जनता में आई.पी.एफ. के नाम से लोकप्रिय था, के बहुत करीब रहे संजीव को करीब से जानने-समझने वाले और उससे लगाव रखने वाले संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी समाज की समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है।

संजीव की कहानियों में मुख्यतः वे समस्याएँ चित्रित हुई, जो एक ओर स्वयं आदिवासी समाज के द्वारा खड़ी की गयी है तो दूसरी ओर पूंजीपति ठेकेदारों, सामन्तों, ठाकुरों, सेठ-साहूकारों, खदान-कारखाना मालिकों, नेताओं डाकुओं, पुलिस, भ्रष्ट अफसर, दलालों तथा व्यवस्था के गठजोड़ से खड़ी की गई है। उदारीकरण के दौर में औद्योगीकरण की विकास प्रक्रिया चल रही है। जिससे आदिवासी समाज के सामने विस्थापन की समस्या बड़े रूप में उभर कर सामने आयी है। पूंजीपतियों ने अधिक से अधिक धन कमाने के चक्कर में लोहा, कोयला आदि खदानों के माध्यम से आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन एवं उनकी रहने की बस्तियों को उजाड़ दिया है। संजीव ने 'टीस' कहानी में इस स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। ''कांकडडीहा कोलियारी के मालिक ने बस्ती के पास ही सुविधा और मुनाफे को ध्यान में रखते हुए एक खुली खदान शुरू कर

दी थी, जो बस्ती की छाती पर एक बड़े घाव की तरह दिनोंदिन गहरी और बड़ी होती गई थी और जिसकी निकाली गयी मिट्टी और पत्थरों के ठूह के जबड़े में समाते गए थे। संथालों के खेत। कुछ तो इसे अपनी नियति मानकर 'चासा' से मजदूर बनकर वहीं ठेकेदारी में खटने लगे थे, लेकिन अधिकांश को यह जिन्दगी रास नहीं आयी थी और वे गिद्धनुमा अधिकारियों और क्लर्कों के चंगुल से मुआवजे की आधी.तीही रकम लेकर धनबाद, रांची या पुरूलिया की ओर ढोर-डांगर, डेरा-डण्डा लेकर चल पड़े थे।''1 और इस विस्थापन से उनमें एक टीस पैदा होती थी कि ''आज कनाई चला गया, आज खोखन, आज गंशा आज मनतोष। अब न मांदल बजेगा न बांसुरी, न झांस बेजगी, न झूमर हो पाएगा। फीका-फीका रह जाएगा मनसा पूजा, छता, पंचमी, जगरनाथपुर और सरहुल का उत्सव।''2

विस्थापन से आदिवासी समाज को जल-जंगल-जमीन छोड़कर मजदूर सँपेरा आदि बनना पड़ता है तो दूसरी तरफ अपनी संस्कृति.सभ्यता का भी त्याग करना पड़ता है। नयी जगह पर वे व्यवस्थित जीवन नहीं जी पाते हैं। आर्थिक व सामाजिक शोषण का शिकार हो जाते हैं। रोटी-कपड़ा-मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं। 'धुआता आदमी' कहानी का नायक जब विस्थापित आदिवासियों की बस्ती में स्त्री.सुख भोगने जाता है तो एक हथकटे आदिवासी की पुत्री के साथ सोने की इच्छा रखता है, तो देखता है कि वह लड़की पहले से ही कपड़े खोल बैठी हुई थी। लेकिन लड़की नंगी होने का जो कारण बताती है, वह हमारे देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। लड़की कहती है कि ''एक ही कपड़ा था अपने पास। गन्दा होने पर दिन को धो नही सकती, रात को ही साफ करके डाल देती हूँ। सुबह तक सूख जाता है, लेकिन तुम नाराज नहीं होना बाबू, बापू को बात खलेगी, इस अंचल में यह आम बात है। मील के निर्माण के दौर में पत्थरों को हटाते हुए उसके बाप जैसे जाने कितने लोग पंगु बेरोजगार और विस्थापित हो इस लीक पर उतरने लगे।''3 हमारे देश के औद्योगीकरण के कारण एक बाप अपनी बेटी को वेश्या बनाने के लिए मजबूर है। आजाद भारत में नाम के लिए जमींदार.सामंत लोगों का खात्मा हो गया लेकिन वास्तविक रूप से आज भी जमींदारों व सामन्तों का रूप देखने को मिलता है। संजीव की प्रेतमुक्ति कहानी में आज भी जमींदार.सामन्त की बेहिसाब चल अचल सम्पत्ति, उसके द्वारा किये जाने वाला आदिवासियों का शोषण और उस शोषण से उपजी.गरीबी भुखमरी, बेकारी और बदहाली का जीवन्त वर्णन मिलता है। संजीव ने प्रेतमुक्ति कहानी क्यों लिखी इसकी वजह भी संजीव खुद बताते है कि ''टुंडी ;धनबाद का पहाड़ी क्षेत्र आदिवासी अंचल में घूमते हुए एक गाँव के बाघ को कुँए में गिरा पाया, पानी पीने गया था बेचारा। निकाला गया था तो बहुत दुबला था। गायें भी छोटी थी बकरियां भी इंसान भी नस्लों के पराभव की प्रेतच्छाया समूचे मानभूमि से पलामू तक फैली पड़ी थी। इस तरह 'प्रेम.मुक्ति' साल भर में लिखी जा सकी।''4 प्रेत मुक्ति के मुखिया के बारे में ''आज तक कोई यह नहीं जान सका कि उसकी जमीन कितनी है और कितनी औरतें।''5

शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

आदिवासियों के सामने महाजनी, गरीबी, भुखमरी के अलावा एक बड़ी समस्या है अपनी औरतों की रक्षा करना। 'टीस' कहानी का गोखुरा नाग; पुजारी पंचानन भट्टाचार्य हो 'प्रेत मुक्ति' की मुखिया और उसके लड़के हो या फिर आप यहाँ है। कहानी के अधिकारी वर्मा जी हो, इन जैसे अत्याचारियों और वहशियो द्वारा आदिवासी महिलाओं का यौनशोषण आम बात है। 'टीस' के शिबू काक की हताशा भरी शिकायत है कि जइसे इ लोग हमारा सब कुछ छीन लिया, वइसे मताई को भी छीन लिया.....साला कितना बहादुर मरद है हम लोग, अपना अंगुल और हासन हेना की ठीकई काट के फेकने सकता मगर ऊ सांप को कुछ नहीं करने सकता....ऊ सांप ठो अभी भी कुण्डली मार के बइठा होगा मंदिर में।''6

प्रेत मुक्ति के मुखिया साहब के बारे में ''सुनते तो यहाँ तक हैं कि अभी भी यहाँ हर दुल्हिन पति से पहले परवान चढ़ती है।''7 मुखिया के लड़के भी जगेसर जैसे गरीब व्यक्तियों के घर आयी नयी दुल्हनों के चक्कर में 'किसी.किसी बहार' टपक पड़ते हैं। 'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासी औरत वर्मा जैसे दिकुओं के घर में चौका बर्तन साफ करते हुए भी सुरक्षित नहीं रह पाती है। वर्मा जैसे लोग इनकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं और आदिवासी औरतें अपनी बेबसी के कारण छटपटा कर रह जाती हैं। हिन्दिया शिलवा गाँव से रेल्वे स्टेशन पर आकर रोज पैदल आधा घण्टा चलते हुए वर्मा साहब के घर आती है। रोज कमरों तथा कपड़ों की सफाई करती है। लेकिन एक दिन कपड़े धोते वक्त मौका देखकर वर्मा जी उसके साथ जबरदस्ती करने लगते हैं और लाचारीवश कहती है कि ''नहीं बाबू नहीं बाबू! हाथ-पाँव उसी मूर्छना में छटपटाए, आँख बाहर चिपकी रही। कांच की दीवार के पार हाथ उठ-उठकर टूट रहे थे......वर्मा साहब के पंजों की खरोंच को झेलते हुए किसी तरह कपाट खोलकर अस्त-व्यस्त बाहर आ गई हिन्दिया।''8 और जब इस हालत में उन्हें मिसेज वर्मा देख लेती है तो वह भी कहती है कि ''तुमसे तो खैर बाद में निबट लूंगी, पहले उस चुड़ैल को मजा न चखाया तो अपने बाप की बेटी नहीं।.....थाने जाकर हिन्दिया पर अपने कपड़े, बर्तन और राशन चुराने का अभियोग दर्ज करवाकर ही लौटी उस दिन। अतः आदिवासी महिलाओं का इस तरह का शोषण आम बात है।''9

आदिवासी समाज के सामने शिक्षा की समस्या भी एक विकट समस्या है आजादी के 65 वर्षों बाद भी आदिवासी समाज में शिक्षा का स्तर अन्य समाजों से बहुत कमतर है। इस समस्या की तरफ सरकार का बहुत ही कम ध्यान गया है। सरकार ने विश्व बैंक जैसी संस्थाओं से ऋण तो काफी ले लिया है, लेकिन उस ऋण को शिक्षा का विकास करने में बहुत कम लगाया है। आदिवासी क्षेत्रों में कुछ गिने-चुने स्कूल खोले गए हैं। उनमें भी सैनिक पुलिस ठहरने की व्यवस्था की जाती है। ऐसी व्यवस्था में आदिवासी समाज के सामने शिक्षा प्राप्त करने एक बहुत बड़ी चुनौती है। 'गुफा का आदमी' कहानी में संजीव बताते हैं कि ''यहाँ स्कूल है ही कहाँ पढ़ना.लिखना सीखने का तो यहाँ एक ही तरीका है मनुष्य मारे और जेल चला जाए। जेल में पढ़ने-लिखने का इन्तजाम है। लौटेगा तो पढ़कर निकलेगा।''10 संजीव की यह कहानी आधुनिक भारत की 'सर्वशिक्षा अभियान' की पोल

खोलती है, कहानी की नायिका सोमा और उसे बेटा मंगरा भी हत्या करके जेल जाते हैं, जहां उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की आशा है सोमा कहती है कि ''तुम चाहते थे न कि बेटा पढ़-लिख जाए, गाँव में स्कूल कहाँ था, जेल में है। अब जेल से पढ़-लिख कर निकलेगा।''11 आदिवासियों के सामने वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त न कर पाना एक ऐसी समस्या है जो अनेक समस्याओं को जन्म देती है।

वर्तमान समय में आदिवासी समाज के सामने विस्थापन की समस्या विस्तार रूप लेती जा रही है, जिसके कारण आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन उजड़ रहे हैं और वे मजदूर श्रमिक बनकर अपना जीवन-यापन करने को मजबूर हैं। मजदूर बनकर काम करते हैं तो भी उन्हें ठेकेदारों के शोषण को सहन करना पड़ता है। 'जीवन के पार' कहानी में संजीव ने चित्रित् किया हैं कि सिंहभूमि जिले में गोनोंग ;वधू मूल्य चुकाने की जुगत मे मानसिंह सुंडी जैसे लोग मजदूरी के लिए दूसरी जगहों पर जाते हैं और लौटकर नहीं आ पातें हैं। फिर वामई तिर्की जैसी कितनी कुमारी चांदो कुमारी दुलो, कुमारी ये, कुमारी वो, तोपा ;समाधियों में सो जाती है। 'जीवन के पार' कहानी का ही आदिवासी युवक मानसिक सुंडी भी अपनी वामई तिर्की का मूल्य चुकाने के लिए ''वन विभाग सड़क विभाग आदि ठेकेदारों के पास महीनों काम किया, मगर हर ठेकेदार मजदूरों का पैसा हड़पने में एक नम्बर का शैतान फिर वह मजबूर होकर कलवा जैसे दलाल के चंगुल में फँसकर 'परदेश' मजदूरी के लिए निकल जाता है क्योंकि उसको मेहनत की पूरी मजदूरी भी नहीं दी जाती। ''यहाँ दिकू ;एक जाति लोगों का राज है वे ही ठेकेदार वे ही हाकिम, देखती नहीं कितना पैसा मार लिया इन लोगों ने मेरा।''13

वर्तमान समय में आदिवासी समाज एक तरफ उदारवाद, उपनिवेशवाद, भूमण्डलीकरण की नीतियों के तहत् व्यवस्था द्वारा खड़ी की गयी समस्याओं से जूझ रहा है, तो दूसरी तरफ उनकी धार्मिक.सामाजिक समस्याएं रही हैं। आदिवासियों के जीवन की धार्मिक.सामाजिक कुरितियों से पैदा डायन प्रथा झाड़-फूँक, ओसाई, बधू मूल्य हडिया पीना आदि ऐसी समस्यायें हैं जो उनके विकास में बाधक बन रही हैं। शराबखोरी की प्रवृत्ति आदिवासी समाजों में आम रही है किन्तु पहले शराब वहाँ मस्ती में डूबने या गलत संगति में पैदा होने वाली लत न होकर जीवन की कठोरता में भी गम भुला कर खुशी ढूँढने के लिए थी, परन्तु वर्तमान दौर में बाहरी लोगों के सम्पर्क में आने से आदिवासियों में स्वयं द्वारा तैयार की गयी शराब के सेवन से अधिक विभिन्न ब्राण्डों द्वारा तैयार शराब का चयन बढ़ता जा रहा है। जिससे वे जहां एक तरफ कर्जदार हो कर गुलामी की तरफ बढ़ रहे हैं, दूसरी तरफ नई-नई बीमारियों से घिर रहे हैं। स्वयं सरकार भी अपनी आबकारी आय की अंधी दौड़ में इन भोले.भाले आदिवासियों को शराब की भट्टी में दिनों.दिन धकेलती जा रही है। रमणिका गुप्ता कहती है कि ''सरकार ने आदिवाससियों को प्रतिदिन शराब बनाकर पीने का ऐसा अधिकार दिया जो उनके लिए यमराज बन गया। इसके चलते यह समाज न सिर्फ कुपोषित हुआ बल्कि मानसिक तौर पर भी प्रभावित हुआ। इसका सीधा अर्थ हुआ 'पियो और मरो' शराब में डूबे रहो, बोलो मत। मस्त

होकर गुलाम रहो, विकास की चर्चा कभी मत करों, जिन्दा लाश बने रहो।''[14] संजीव ने 'टीस' कहानी में बताया है कि किस तरह से पूंजीपति लोग आदिवासियों को शराब की लत लगा कर उनके जल-जंगल-जमीन को छीन लेते हैं। शराब पिलाकर उनको इतना हीन बना देते हैं कि वे अपने तीर.धनुषों, फरसों, कुल्हाडियों की ताकत भूल जाते हैं। शिबू काका इस विड़म्बना की शिकायत करते हुए कहते हैं कि ''मत पूछो भाईयों, बाकी इन आदिवासी को माड़ी पिला के चाहे बइसेइ उल्टा-सीध बुझा के जो कराने सकता इ लोग। उनका जनाना लोग तक से मनमाना करता इ लोग।''[15]

आदिवासी समाज में शिक्षा का अभाव रहा है। इस कारण इनके समाज में अनेक अंधविश्वास भी व्याप्त हैं जो उनकी उन्नति में एक बाधक तत्व रूप में सामने आ रहे हैं। डॉ.शहाजहान मणेर लिखते हैं कि गाँव में कोई अशुभ घटना होती है या कोई बीमार पड़ता है या किसी की गाय-बकरी मर जाती है तब यह माना जाता है कि किसी मनहूस व्यक्ति के कारण अशुभ घटनाएँ घटित होती हैं। तब उस व्यक्ति को ओझा डायन घोषित कर देते हैं।''[16] आदिवासी समाज में टोना टोटका, झाड-फूंक का बड़ा प्रचलन है। महामारी कहानी में रंगई बहु का मानना है कि बिल्ली की खेढ़ी घर में रखने से लखपति बनते हैं और बांझ औरत को लड़का होता है। लेखक लिखते हैं तब से रंगई बहुत बिल्लियों की टोह में रहती है। किसी के गाभिन होने का आभास होता है, उन्हें दूध रोटी दे-देकर परकाया करती। .....भाग्य जगाने की कोशिश में कई-कई खेढिया जमा हो चली थी उसके पास।''[17] आदिवासी समाज में चेचक जैसी बीमारी फैल जाती है तो आदिवासी लोग डाक्टरी इलाज न कराके झाड़-फूंक व पूजा अर्चना करते और पूजा अर्चना से बीमारी ठीक होने की बजाय बढ़ती चली जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आदिवासी समाज में अज्ञान व अशिक्षा के कारण अनेक अधंविश्वास प्रचलित है, जो आदिवासी समाज को अंधकार के कुँए में ढकेलते जा रहे हैं। संजीव की कहानियाँ आदिवासी समाज को इन सभी बुराईयों को दूर करने का प्रयास करती है। इनकी कहानियों में आज के भूण्डलीकरण पूंजीकरण, उदारीकरण के चलते विस्थापन, बेरोजगारी, भुखमरी, घटते जल—जंगल-जमीन, बढ़ती धन लोलुपता। घटते खनिज संसाधन। घटती आदिवासी जन संख्या और उनके सामने नित नयी बढ़ती समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत कर आदिवासी समाज को नेताओं, अफसरों, महाजनों, ठेकेदारों, जमींदारों, सामन्तों के शोषणकारी चंगुल से बाहर निकालने का प्रयास करती है। आदिवासी समाज को संघर्ष करके व्यवस्था परितर्वन करने की चुनौती देती है।

सन्दर्भ सूची

1 संजीव की कथा यात्रा',पहला पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.362

2 वही, पृ.63

3 वही, पृ.82

4 संजीव, मेरी रचना प्रक्रिया ,लेख गिरीश काशिद ,संपा.कथाकार संजीव पृ.125

5 संजीव की कथा यात्रा, पहला पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.333

6 वही, पृ.68

7 वही, पृ.323

ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2014

8 वही, पृ.162

9 वही, पृ.162

10 संजीव, संजीव की कथा यात्रा, तीसरा पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ.135

11 वही, पृ.342

12 वही, पृ.346

13 वही, पृ.315

14 रमणिका गुप्ता, विकास के मन्दिर या मकबरे, अरावली उद्घोष ;पत्रिका, क्रमांक93, सितम्बर 2011, पृ.19

15 संजीव संजीव की कथा यात्रा', पहला पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.66

16 डॉ.शहाजहान मणेर, सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव, श्रुति पब्लिकेशन्स, जयपुर, संस्करण-2009, पृ.166

17 संजीव, संजीव की कथा यात्रा', पहला पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.236